रात्रि क्लास 8-3-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

जो अपने देवी-देवता धर्म के होंगे वह आ जावेंगे। ड्रामा प्लैन अनुसार यह ईश्वरीय मिशन चल रही है। जैसे उनकी मिशन है क्रिश्चन बनाना। जो क्रिश्चन बनते हैं उनको क्रिश्चन डिनायस्टी से सुख मिलता है। वेतन अच्छा मिलता है। डबल मिलता है तो क्यों नहीं जावेंगे। यहां 50 तो तो विलायत में 1500 इसलिए क्रिश्चन बहुत बन गये हैं। भारतवासी इतना नहीं दे सकते। यहां ~~क्रिश्चन~~ क्रश्चन बहुत हैं। लाईन बनी हुई है। बीच में कोई रिश्वत न लेवे तो उनको नौकरी से ही जबाब। तो बाबा से पूछते हैं इस हालत में क्या करें। कहेंगे तुम भी करो। फिर शुभ कार्य में लगा देना। जैसे एक मुसलमान का मिशाल देते हैं। चोरी की थी ~~प्रोप्रो~~ बोलाहम ने मस्जिद में लगाया है। अभी जो चाहो करो। फिर जज छोड़ दिया। नहीं तो जज से भी बिगर पड़े खुदा के लिए बनाया। इसके लिए सज़ा देते हो। यहां सब हैं बन्दे। भक्ति करने वाले। उनको बन्दगी से छूड़ाना है। भक्ति मार्ग में सभी पुकारते हैं। बन्दे हैं सब विकारी। पुकारते हैं बाप को। कि आकर हमपतितों को पावन बनाओ। भक्ति में है दुःख। इसलिए सभी पुकारते हैं आकर लिबरेट करो। घर में ले जाओ। बाप ही घर ले जावेंगे ना। घर जाने लिए इतनी भक्ति चलती है। जब बाप आये आकर लिबरेट करे तब जाये। ऐसे नहीं सब में भगवान आकर बोलते हैं। भगवान है ही एक। उनका आना ही संगम पर होता है। अभी तुम ऐसी बातें नहीं मानेंगे। आगे मानते थे। अभी तुम भक्ति नहीं करते हो। कहेंगे यह तो नास्तिक बन गये हैं। ~~इ~~ बोलो हम पूजा करते थे। अभी बाप आया है हमको पूज्य देवता बनाने। सिक्खों को भी तुम समझाओ। गायन है ना मनुष्य से देवता · · देवताओ की महिमा है ना। देवतायें रहते ही हैं सतयुग में। अभी है कलियुग। तो बाप भी संगम पर पुरुषोत्तम बनने की शिक्षा देते हैं। देवतायें हैं सब से उत्तम। तब तो इतना पूजे जाते हैं। किसको भी भक्ति मार्ग में मालूम है नहीं। जिसकी पूजा करते हैं वह जरूर कब थे। अभी नहीं हैं। यह कहां गये। मुख्य है ल०ना०। समझते हैं यह राजधानी पास्ट हो गई है। तुम बच्चे हो गुप्त। कोई जानते थोड़े ही हैं हम विश्व के मालिक बनने वाले हैं। कहते तो हैं स्वर्ग पधारा। परन्तु वहां बनेंगे। तुम तो जानते हो हम पढ़ कर यह बनते× हैं। पढ़ाई पर बहुत अटेन्शन देना है। बापको याद करना है बहुत ही प्यार से। बाबा तो हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। तो क्यों नहीं याद करें। फिर देवी गुण भी चाहिए। यह है शिव बाबा का भण्डारा। यह बाबा भी ट्रस्टी है। तो ट्रस्टी ~~प्रे~~ से पूछकर चलना चाहिए ना। अगर बेकायदे चलन होंगी तो समझें जंगली ऐसे होते हैं। शिवबाबा की छूट्टी बिगर यज्ञ में ऐसे जंगली होते हैं। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।

रात्रि क्लास 7-3-68 ओमशान्ति "मन्मनाभव"

अभूल तो बनना है। भूल कराती है रावण। सभी भूले हुये हैं। भक्ति भी भूले हुये करते हैं। जानते नहीं कि हम किसकी भक्ति करते हैं। भक्ति है जैसे दुबन। ~~जहां~~ जहां ~~क्लिली~~ कलराठी ज़मीन और सागर का पानी होता है। उनको दुबंन कहते हैं। भक्ति-मार्ग भी जैसे कि दुबन है। शोभनिक बहुत हैं। तो और ही फंस पड़ते हैं। निकालने में तुम बच्चों को कितनी मेहनत करनी पड़ती है। तुम बच्चों को अभी मिला है सोझरा। ऋषि-मुनि आद भी कहते थे नेती2। अभी तुमको तो बाप मिला है। तुम सभी को बाप का और रचना के आदि मध्य अन्त का परिचय देते हो। अभी तुम अपने लिए राज धानी स्थापन करते हो। तुम सभी एक ही परिवार के हो। बाप आकर पढ़ाते हैं। राजयोग सिखलाते हैं। कृष्ण की भी आत्मा यहां है ना। तो तुम सभी उनके परिवार के हो। काला और गोरा भी ~~कृष्ण~~× कृष्णको कहते हैं। ~~ल०~~ ल०ना० को भी गोरा और सांवरा ~~समझते हैं~~ दिखाते हैं। सांवरा सभी को बनाते हैं। शिव बाबा का भी काला लिंग बनाते हैं। पत्थर तो मिनती है। श्रीनाथ, काली का कितना काला चित्र है तो पत्थर काला होता है। पानी भी चढ़ता है तो तेल भी चढ़ता है तो जरूर ऐसा काला पत्थर होगा। अभी बच्चों ने समझा है ज्ञान क्या है भक्ति क्या है। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते पढ़ते भी रहो। याद भी

7-3-68 M

करो। दैवी-गुण भी धारण करो। शास्त्रों में यह बातें नहीं हैं। बाप ही आकर सभी शास्त्रों का सार सुनाते हैं। दिखाते भी हैं ब्रहमा के हाथ में शास्त्र। परमात्मा फिर विष्णु को समझते हैं। परम पिता परमात्मा ब्रहमा द्वारा समझाते हैं। ऐसे ही कहेंगे। विष्णु का नाम नही लेंगे। एक ही शिव परमात्मा है जो पुनर्जन्म नही लेते। अभी ब्रहमा कहां से आया। कैसे जन्म लिया? यह एडाप्ट हुआ। जन्म की बात नहीं। कृष्ण तो मां के पेट से हुआ। शिव तो है निराकार। ब्रहमा तो शरीर का नाम है। वह किससे पैदा हुआ? शरीरधारी हैं ना। शास्त्रों में कुछ भी वर्णन नहीं हैं। बाप कहते हैं बहुत जन्मों के अंत में मैं इन में प्रवेश करता हूं। तुमको भी अभी ज्ञान हुआ है। वह तो जरूर मुझेंगे। ब्रहमा के नाम पर मुंझने कारण एक चित्र में ल0ना0 के ऊपर सिर्फ शिव को दिखाया था। शिव बाबा ने यह स्वर्ग रचा। इनको (ल0ना0) को भी रचा। थोड़े ही समय के लिए वह चित्र बना दिया था। कृष्ण का चित्र तो बहुत अच्छा है। परन्तु 84 जन्म की कहानी देखते हैं तो वह निकाल भी हैं। बाकी कृष्ण को रख देते हैं। भक्ति मार्ग में ढेर के ढेर चित्र हैं। अभी समझते हैं ऊंच ते ऊंच भगवान है। फिर है लक्ष्मी-नारा0 सीता राम। ब्रहमा तो थोड़ा ही टाईम है ना। तुम बच्चों को अजमेर के मंदिर में जाकर पूछना चाहिए। पुष्कर वाले बहुत कर के शास्त्र ही सुनाते हैं। वह ब्राहमण श्राध खाने वाले होते हैं। वह हैं शास्त्र सुनाने वाले। तो बाप यह सब समझाते रहते हैं। तुम हो ब्राहमण। मुख्य समझाया जाता है। दो बाप जरूरी है। यह ड्रामा ही सारा वन्डरफुल बना हुआ है। सतयुग में हम बाप को याद नहीं करते हैं। यह अभी अनुभव प्रेक्टीकल की बातें हैं। वह है शास्त्रों की सुनी सुनाई बातें। अभी बाप कहते हैं इसमें मेहनत है। शरीर का भान भी छोड़ दो। देहद के बाप को हम क्यों नहीं याद करेंगे। परन्तु माया भूलाये देती है। जो बात बीती उनका चिन्तन न करना चाहिए। छोड़ना चाहिए यह न करना चाहता था। बीती को चिन्तन नहीं। इसलिए कदम2 पर सावधानी मिलती है। जिस बाप से विश्व का स्वराज्य मिलता है उस बाप को याद क्यों नहीं करते हैं। विश्व में जो मालिक थे वह पवित्र थे। हमको भी जरूर पवित्र बनना है। जन्म-जन्मान्तर के पाप रहे हुये हैं। वह काटनी है। बाप कहते हैं बच्चे जीते रहो। शरीर छोड़ा तो कमाई चट हो जावेगी। बहुत गई थोड़ी रही ... बाबा को जल्दी याद करें। तीव्रवेगी जो अच्छे2 होंगे वह पुरुषार्थ जरूर करेंगे। बहिन-भाई के सम्बन्ध में भी बहुत भूले होती है। रूहानी आत्मा देखने से कुछ नहीं होगा। हम आत्मा हैं। भल भाई-भाई को देखो। मेहनत है ना। देही-अभिमानी बनना है। भाई-भाई है तब ही बाप से वर्सा मिलेगा। सबजेक्ट गुह्य होती जाती है। मेहनत बढ़ती जाती है। बच्चे समझते हैं हम अपने को आत्मा समझ उनको समझाते हैं। इस परिवार का न होगा तो सुनेंगा भी कैसे। भक्ति मार्ग में अनेक-अनेक बातें हैं। इस में है एक। अपने को आत्मा समझे तब ही वर्से का लायक समझे। बहिन भाई को तो वर्सा नहीं मिलता है। कहते भी हैं हम सभी भाई-भाई हैं। रशियन-इन्डियन भाई-भाई हैं। हम सभी आत्मायें बच्चे तो एक के ही हैं। बहिन भाई से समझ नहीं सकते हैं। हम एक ही बाप के बच्चे हैं। यह सभी बातें तुम ही जानते हो। भक्ति मार्ग की शिवलिंग और ज्ञान मार्ग के शिवलिंग ही अलग है। यह बाप ही जानते हैं और बत लाते हैं। यह खेल भी बन्द होनी नहीं है। रचता और रचना तो है ही है। सृष्टि चक्र लगाती रहती है। कब कब मत पूछते हैं भगवान ने आवागमन का चक्र क्यों रचा। उनको क्या मज़ा आता है। यह सब बनाया हुआ खेल है। तुम छूट नहीं सकते हो। अच्छा गुडनाईट, नमस्ते।

पाईन्टस:- बाप कहते हैं कितने निभागिन बन गये हैं। यानि दुर्भाग्यशाली। बाप पदमपति बनाते हैं। इतना ऊंच बनाते हैं तो उनकी आज्ञा माननी चाहिए ना। परन्तु माया बुद्धि को ऐसा बिगार देती है जो सुधरते ही नहीं। और ही बिगर जाते हैं। बाप मत तो बहुत अच्छी देते हैं। परन्तु तकदीर में न है तो उठा न सके। अच्छा ओम। (9-3-68-प्रातः)

-: : ओमशान्ति: : -